अरुण आदित्य / मैं भी अन्ना...

गलियाँ बोलीं, मैं भी अन्ना, कूचा बोला, मैं भी अन्ना!
सचमुच देश समूचा बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

भ्रष्ट तन्त्र का मारा बोला, महँगाई से हारा बोला!
बेबस और बेचारा बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

साधु बोला मैं भी अन्ना, योगी बोला मैं भी अन्ना!
रोगी बोला, भोगी बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

गायक बोला, मैं भी अन्ना, नायक बोला, मैं भी अन्ना!
दंगों का खलनायक बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

कर्मनिष्ठ कर्मचारी बोला, लेखपाल पटवारी बोला!
घूसख़ोर अधिकारी बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

मुम्बई बोली मैं भी अन्ना, दिल्ली बोली मैं भी अन्ना!
नौ सौ चूहे खाने वाली, बिल्ली बोली, मैं भी अन्ना!

डमरू बजा मदारी बोला, नेता खद्दरधारी बोला!
जमाख़ोर व्यापारी बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

हइया बोला मैं भी अन्ना, हइशा बोला मैं भी अन्ना!
एनजीओ का पइसा बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

दायां बोला, मैं भी अन्ना, बायां बोला, मैं भी अन्ना!
खाया, पिया, अघाया बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

निर्धन जन की तंगी बोली, जनता भूखी नंगी बोली
हीरोइन अधनंगी बोली, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

नफ़रत बोली मैं भी अन्ना, प्यार बोला मैं भी अन्ना!
हँसकर भ्रष्टाचार बोला, मैं भी अन्ना, मैं भी अन्ना!

प्यारे बेटे के नाम

(1)

पढने गए हो
खूब पढो
बुलन्दियों पर चढो
लेकिन,यह तो बताओ
क्या तालीम का मक़सद
सिर्फ़ यही हुआ करता है
डाक्टर,इन्जीनियर बन जाओ
बड़ा ओहदा हासिल कर पाओ
पैसा;
जाहिल भी कमा लेते हैं
दौलत के अंबार लगा लेते हैं
(2)
इन्सानियत तड़पती रहे
नफ़रतें बढती रहें
बस्तियां उजड़ती रहें
खून ख़राबा चलता रहे
गरदनें कटती रहें
शैतान मुस्कुराता रहे
क़हक़हे लगाता रहे
इन्सानियत को चिढाता रहे
और तुम;
ख़ामोश रहो
क्या इसी को तालीम कहा जाता है
लानत है ऐसी तालीम पर
जो इन्सानों को जानवर बनाती हो
मक्कारी सिखाती हो
खुद गर्ज़ बनाती हो
(3)
झूट, रिश्वत ,सियासी मक्कारियां
भूक, प्यास और ग़रीबी
सिसकियां और बदनसीबी
ना लिबास,ना मकान,ना इलाज,ना तालीम
दूर तक अन्धेरा
हमसे नही सहा जाता
नही देखी जाती यह बदनसीबी
नही सुनी जातीं यह सिसकियां
ना माँ,बहन ,बेटियां महफ़ूज़
ना ग़रीब की कोई इज्ज़त
ना इंसाफ़ है अदालतों में
हम जी रहे है मुग़ालतों में
मज़हब के नाम पर खून ख़राबा
ज़ात पात की जहालत
इक़्तदार का नशा, सियासत का गुरूर
ताक़त का पागल पन,दौलत का सुरूर
यह जुल्म,यह नफ़रतें,यह दूरियां
मिटा सको तो मिटाओ
मुहब्बत के गीत
प्यार के नग़में
इंसाफ़ के तराने
गा सको तो गाओ
वरना जाने कितने डाक्टर, इन्जीनियर
तालीम गाहों से निकलते हैं
खाते हैं, पीते हैं ,ऐश करते हैं
दौलत के अम्बार लगाते हैं
और दुनिया से चले जाते हैं

– साइबर नज़र

इस सप्ताह / मकान की देखभाल

कल अपनी पुरानी सोसाइटी में गयी थी। वहां मैं जब भी जाती हूं, मेरी कोशिश होती है कि अधिक से अधिक लोगों से मुलाकात हो जाए।

कल अपनी पुरानी सोसाइटी में पहुंच कर गार्ड से बात कर रही थी कि और क्या हाल है आप लोगों का, तभी मोटरसाइकिल पर एक आदमी आया और उसने झुक कर प्रणाम किया।

"दीदी, प्रणाम।"

मैंने पहचानने की कोशिश की। बहुत पहचाना-पहचाना लग रहा था। पर नाम याद नहीं आ रहा था।

उसी ने कहा, दीदी पहचाने नहीं? हम बाबू हैं। बाबू। उधर वाली आंटी के जी के घर काम करते थे।

मैंने पहचान लिया। अरे ये तो बाबू है। सी ब्लॉक वाली आंटी जी का नौकर।

"अरे बाबू, तुम तो बहुत तंदुरुस्त हो गए हो। आंटी कैसी हैं?"

बाबू हंसा, "आंटी तो गईं।"

"गईं? कहां गईं? उनका बेटा विदेश में था, वहीं चली गईं क्या? ठीक ही किया उन्होंने। यहां अकेले रहने का क्या मतलब था?" अब बाबू थोड़ा गंभीर हुआ। उसने हंसना रोक कर कहा, "दीदी, आंटी जी भगवान जी के पास चली गईं।"

"भगवान जी के पास? ओह! कब?"

बाबू ने धीरे से कहा, "दो महीने हो गए।"

"क्या हुआ था आंटी को?"

"कुछ नहीं। बुढ़ापा ही बीमारी थी। उनका बेटा भी बहुत दिनों से नहीं आया था। उसे याद करती थीं। पर अपना घर छोड़ कर वहां नहीं गईं। कहती थीं कि यहां से चली जाऊंगी तो कोई मकान पर कब्जा कर लेगा। बहुत मेहनत से ये मकान बना है।"

कोलंबा कालीधर

"हां, वो तो पता ही है। तुमने खूब सेवा की। अब तो वो चली गईं। अब तुम क्या करोगे?"

अब बाबू फिर हंसा। मैं क्या करुंगा दीदी? पहले अकेला था। अब गांव से फैमिली को ले आया हूं। दोनों बच्चे और पत्नी अब यहीं रहते हैं।"

"यहीं मतलब उसी मकान में?"

"जी दीदी । आंटी के जाने के बाद उनका बेटा आया था। एक हफ्ता रुक कर चले गए। मुझसे कह गए हैं कि घर देखते रहना। चार कमरे का इतना बड़ा फ्लैट है। मैं अकेला कैसे देखता? भैया ने कहा कि तुम यहीं रह कर घर की देखभाल करते रहो। वो वहां से पैसे भी भेजने लगे हैं। और सबसे बड़ी बात ये है कि मेरे बच्चों को यहीं स्कूल में एडमिशन मिल गया है। अब आराम से हूं। कुछ-कुछ काम बाहर भी कर लेता हूं। भैया सारा सामान भी छोड़ गए हैं। कह रहे थे कि दूर देश ले जाने में कोई फायदा नहीं।"

मैं हैरान थी। बाबू पहले साइकिल से चलता था। आंटी थीं तो उनकी देखभाल करता था। पर अब जब आंटी चली गईं तो वो चार कमरे के मकान में आराम से रह रहा है। आंटी अपने बेटे के पास नहीं गईं कि कहीं कोई मकान पर कब्जा न कर ले। बेटा मकान नौकर को दे गया है, ये सोच कर कि वो रहेगा तो मकान बचा रहेगा।

मुझे पता है, मकान बहुत मेहनत से बनते हैं। पर ऐसी मेहनत किस काम की, जिसके आप सिर्फ पहरेदार बन कर रह जाएं? मकान के लिए आंटी बेटे के पास नहीं गईं। मकान के लिए बेटा मां को पास नहीं बुला पाया। सच कहें तो हम लोग मकान के पहरेदार ही हैं। जिसने मकान बनाया वो अब दुनिया में ही नहीं है। जो हैं, उसके बारे में तो बाबू भी जानता है कि वो अब यहां कभी नहीं आएंगे।

मैंने बाबू से पूछा कि तुमने भैया को बता दिया कि तुम्हारी फैमिली भी यहां आ गई है?

"इसमें बताने वाली क्या बात है ? वो अब कौन यहां आने वाले हैं? और मैं अकेला यहां क्या करता? जब आएंगे तो देखेंगे। पर जब मां थीं तो आए नहीं, उनके बाद क्या आना? मकान की चिंता है, तो वो मैं कहीं लेकर जा नहीं रहा। मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।" बाबू फिर हंसा।

मैं समझ रही थी कि बाबू अब नौकर नहीं रहा। वो मकान मालिक हो गया है। हंसते-हंसते मैंने बाबू से कहा, "भाई, जिसने ये बात कही है कि मूर्ख आदमी मकान बनवाता है, बुद्धिमान आदमी उसमें रहता है, उसे ज़िंदगी का कितना गहरा तजुर्बा रहा होगा।"

बाबू ने धीरे से कहा, "दीदी, सब किस्मत की बात है।"मैं वहां से चल पड़ी थी ये सोचते हुए कि सचमुच सब किस्मत की ही बात है।

लौटते हुए मेरे कानों में बाबू की हंसी गूंज रही थी।"मैं मकान लेकर कहीं जाऊंगा थोड़े ही? मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।" मैं सोच रही थी, मकान लेकर कौन जाता है? सब देखभाल ही तो करते हैं।

अंधविश्वास से उपजा भगवान

1977 की बात है। मद्रास हाईकोर्ट में एक याचिका आई जिसमें कहा गया था कि तमिलनाडु में पेरियार की मूर्तियों के नीचे जो बातें लिखी हुई हैं, वे आपत्तिजनक हैं और लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती हैं इसलिए उन्हें हटाया जाना चाहिए। याचिका को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि ईरोड वेंकट रामास्वामी पेरियार जो कहते थे, उस पर विश्वास रखते थे इसलिए उनके शब्दों को उनकी मूर्तियों के पैडेस्टल पर लिखवाना गलत नहीं है।

*पेरियार की मूर्तियों के नीचे लिखा था- ईश्वर नहीं है और ईश्वर बिलकुल नहीं है।

जिस ने ईश्वर को रचा वह बेवकूफ है, जो ईश्वर का प्रचार करता है वह दुष्ट है और जो ईश्वर की पूजा करता है वह बर्बर है।

पेरियार नायकर के ईश्वर से सवाल :-

1. क्या तुम कायर हो जो हमेशा छिपे रहते हो, कभी किसी के सामने नहीं आते?

2. क्या तुम खुशामद परस्त हो जो लोगों से दिन रात पूजा, अर्चना करवाते हो?

3.क्या तुम हमेशा भूखे रहते हो जो लोगों से मिठाई, दूध, घी आदि लेते रहते हो?

4. क्या तुम मांसाहारी हो जो लोगों से निर्बल पशुओं की बलि मांगते हो?

5. क्या तुम सोने के व्यापारी हो जो मंदिरों में लाखों टन सोना दबाये बैठे हो?

6. क्या तुम व्यभिचारी हो जो मंदिरों में देव दासियां रखते हो ?

7. क्या तुम कमजोर हो जो हर रोज होने वाले बलात्कारों को नही रोक पाते?

8. क्या तुम मूर्ख हो जो विश्व के देशों में गरीबी-भुखमरी होते हुए भी अरबों रुपयों का अन्न, दूध,घी, तेल बिना खाए ही नदी नालों में बहा देते हो?

9. क्या तुम बहरे हो जो बेवजह मरते हुए आदमी, बलात्कार होती हुयी मासूमों की आवाज नहीं सुन पाते?

10. क्या तुम अंधे हो जो रोज अपराध होते हुए नहीं देख पाते?

11. क्या तुम आतंकवादियों से मिले हुए हो जो रोज धर्म के नाम पर लाखों लोगों को मरवाते रहते हो?

12. क्या तुम आतंकवादी हो जो ये चाहते हो कि लोग तुमसे डरकर रहें?

13. क्या तुम गूंगे हो जो एक शब्द नहीं बोल पाते लेकिन करोड़ों लोग तुमसे लाखों सवाल पूछते हैं?

14. क्या तुम भ्रष्टाचारी हो जो गरीबों को कभी कुछ नहीं देते जबकि गरीब पशुवत काम करके कमाये गये पैसे का कतरा-कतरा तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर देते हैं?

15. क्या तुम मूर्ख हो कि हम जैसे नास्तिकों को पैदा किया जो तुम्हे खरी खोटी सुनाते रहते हैं और तुम्हारे अस्तित्व को ही न ?कारते हैं।

"नास्तिक" होना आसान नही कोई भी "नासमझ" इंसान "ईश्वर" के अस्तित्व को मानकर फ्री हो जाता है उसके लिए उसे "बुद्धि"की जरुरत नही होती परंतु नास्तिक होने के लिए "दृढ विश्वास और साहस" की जरूरत होती है ऐसी "योग्यता" उन लोगो के पास होती है जिनके पास "प्रखर तर्क बुद्धि" होती है "अंधश्रद्धा" ऐसा "केमिकल" है जो इंसान को "मूर्ख" बनाने मे काम आता है !

– साइबर नजर

यक्ष और चुटकुला राज

पंकज मिश्र

यक्ष – आज मूड ठीक नही है , कोई चुटकुला सुनाओ राजन.

युधिष्ठिर – एक डेटा था , उसे 13 फीट ऊंची और 5 फीट मोटी दीवाल में .....

यक्ष – नहीं नही , ये वाला नही ....

युधिष्ठिर – ओके, तो दूसरा सुनिये , एक राष्ट्र खतरे में था तो लोगो ने सोचा कि राष्ट्र रक्षा यज्ञ किया जाए ...

यक्ष – नही नही , ये वाला भी सुन चुका हूं ....

युधिष्ठिर – हम्म, तो फिर ये सुनिये , हंसते हंसते लोटपोट हो जाएंगे ...

यक्ष – क्या तुम वो 100 दिन में विदेश से काला धन ..

युधिष्ठिर – नही नही , ये तो घिस चुका है ....

यक्ष – तब वो वाला क्या, हर साल दो करोड़ ..

युधिष्ठिर – नही नही ... ये भी पुराना है ... एक कम पुराना चुटकुला है.

यक्ष – तो सुनाओ न ..

युधिष्ठिर -एक मंत्री जी, वो भी सेंटर में, बोले कि वो जूकरबर्ग को घसीट के इंडिया ला सकते है.....तो ....

यक्ष- उफ्फ ! ये बड़बोल वाले चुटकुले बन्द करो ...

दूसरा jonour पकड़ो ...

युधिष्ठिर – तो नेहरू सीरीज़ से कुछ ढूंढू ...

यक्ष – नहीं, कुछ नॉन पोलिटिकल सुनाओ न ...

युधिष्ठिर – कहां से नॉन पोलिटिकल लाऊं? हर फील्ड में तो यही सब फैला है ....

2000 की नोट में चिप, चिपका दी गई थी, सेटेलाइट सिग्नल पकड़ता था ... या

गंगाधर नेहरु ने कभी ख्वाब भी देखा होगा कि वो गयासुद्दीन गाज़ी के नाम से जाने जाएंगे.

राणा प्रताप ने घास की रोटी तोड़ते वक्त कभी सोचा होगा कि 21वीं सदी में उनके भी अच्छे दिन आएंगे?

सुभाष चन्द्र बोस भी उम्मीद से होंगे कि वो नेहरू से बदला ले सकेंगे मगर मसूद अजहर ने सब गोंड़ दिया ...

यक्ष- तो हमारी खुशी के लिए तुम कुछ नही कर सकते ...

युधिष्ठिर – बिल्कुल कर सकते है, ऐसा है, खुश होना है तो पाकिस्तान चले जाइये... खुशहाल हो जाएंगे ....टिकट अरेंज करूँ क्या .... ?

यक्ष – हाहाहाहा ... ये भी खूब चुटकुला सुनाया तुमने ... पाकिस्तान जैसे असफल राज में खुशहाली? .... हाहाहाहा .... ये बढिया चुटकुला सुनाया तुमने ...

युधिष्ठिर – मगर ये चुटकुला नहीं है यक्ष, ये सच्चाई है. पाकिस्तान खुशहाली इंडेक्स में 67वीं रैंक पे है, हम 140 पे ...कोई तुलना ही नही...

यक्ष – आआएँ !